❶

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

पाहि माम्।
यजुर्वेद 2/16

हे प्रभो! मेरी रक्षा करो।

O God ! Protect me from all sides and in every way.

वर्ष 42, अंक 8 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 7 जनवरी, 2019 से रविवार 13 जनवरी, 2019
विक्रमी सम्वत् 2075 सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 195 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला, प्रगति मैदान : 5 जनवरी से 13 जनवरी, 2019

हिन्दू समाज का जागृत प्रहरी बना आर्य समाज

अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश को जन साधारण तक पहुंचाने हेतु आपकी आहुति अत्यावश्यक

13 जनवरी को होगा समापन : स्वाध्याय की प्रेरणा के साथ आर्यजन स्वयं पहुंचें तथा अन्यों को भी पहुंचने के लिए प्रेरित करें

हिन्दी : हॉल नं. 12 स्टाल : 222-231

बाल साहित्य हॉल नं. 7डी स्टाल : 188

देश की राजधानी दिल्ली में पांच जनवरी से पुस्तक मेले का शुभारम्भ हो गया है। मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय द्वारा बनाई गई स्वायत्त संस्था राष्ट्रीय पुस्तक ट्रस्ट द्वारा पुस्तक मेले का आयोजन किया जाता है। इसके एक पहलू को देखें तो इस पुस्तक मेले के आयोजन का मुख्य उद्देश्य लोगों में पुस्तकों के प्रति रुचि पैदा करना है। दूसरा पाठकों को एक ही स्थान पर विभिन्न विषयों की हजारों पुस्तकें मिल जाना होता है तो साथ प्रकाशकों को भी अपनी पुस्तकें प्रस्तुत करने के लिए एक उचित मंच उपलब्ध हो जाता है। पुस्तक मेले में इतिहास, भूगोल, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, यात्रा, धर्म, भाषा, आत्मकथाएं, लोककथाएं, मनोरंजन, सहित अनेकों विषयों पर पुस्तकें मिल जाती हैं।यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि कोई विषय ऐसा नहीं होता जिस पर विश्व पुस्तक मेले में पुस्तक न मिले।

किन्तु इसका एक दूसरा हिस्सा भी है जहाँ विधर्मी समुदाय हमारे ग्रंथो पर हमला भी कर रहे हैं। नकली मनु स्मृति से लेकर अनेकों ग्रन्थ गलत तरीकों से छापकर बेचे जा रहे है। आप पुस्तक मेले में आकर स्वयं देख सकते है कि इस्लाम के मानने वालों से लेकर ईसाई व कई अन्य पंथ अपनी पुस्तकें निशुल्क वितरित करते मिल जायेंगे। युवक युवतियों को निशाना बनाया

- *शेष पृष्ठ 4 पर*

(बाए) नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले में आर्यसमाज के साहित्य प्रचार स्टाल (हिन्दी) का उद्घाटन करते महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं आर्य केन्द्रीय सभा के महामन्त्री श्री सतीश चड्डा जी, श्री सुरिन्द्र चौधरी जी एवं अन्य महानुभाव। (मध्य) सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर सहित्य खरीदते पुस्तक प्रेमी।
(दाए) बाल साहित्य स्टाल का उद्घाटन करते सर्वश्री रविदेव गुप्त जी, चतर सिंह नागर जी, सत्यानन्द आर्य जी, सतीश चड्डा, श्रीमती उषाकिरण आर्य जी, दिल्ली सभा के उप प्रधान श्री शिवकुमार मदान जी, श्री योगेश आर्य जी, श्री अजय तनेजा जी, श्री सुखबीर सिंह आर्य जी एवं अन्य महानुभाव।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के मार्ग निर्देशन में

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, जिला उप आर्य प्रतिनिधि सभा प्रयाग, आर्य वीर दल, स्थानीय आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं के सहयोग से

कुम्भ मेला - प्रयागराज - 2019 में आर्य समाज

यज्ञ के साथ आर्यसमाज का प्रचार प्रारम्भ

आर्यजन कुम्भ मेले के प्रचार यज्ञ में भारी संख्या में पहुंचें - सुरेशचन्द्र आर्य, प्रधान, सार्व. सभा

महाशय धर्मपाल जी ने किया कार्यकर्ताओं से पूरे जोश से जुटने का आह्वान

भारत देश आध्यात्मिक देश है धर्म की थाती है और अनेकों पन्थो मतो का उदगम स्थल भी है। आध्यात्म का ज्ञान यहाँ से प्रसारित हुआ साथ ही अनेकों महापुरुषों ने इसी धराधाम पर जन्म भी लिया। यहाँ कई उत्सव, त्यौहार मनाए जाते हैं तो साथ ही धार्मिक-आध्यात्मिक आयोजन बहुत ही भव्य व आस्था के साथ मनाए जाते हैं। कुंभ मेला भी इन्ही आयोजनों में से एक है, इसमें शामिल होने के लिए देश-विदेश से बड़ी संख्या में लोग आते हैं। इस बार 2019 में कुंभ मेले का आयोजन प्रयागराज में किया जा रहा है। प्रयागराज में अर्धकुंभ 15 जनवरी 2019 से प्रारंभ हो जाएगा और 4 मार्च 2019 तक चलेगा।

कुम्भ का पर्व एक महान अवसर हैं सम्पूर्ण देश के साथ विदेशों से करोड़ों व्यक्तियों का धार्मिक भावना से एकत्र होना अपने आप में हिन्दू संस्कृति के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि हैं। यह एक ऐसा आयोजन होता है जिसमें करोड़ों श्रद्धालु, जिज्ञासु, संत, महात्मा विद्वान और तपस्वी गण भाग लेते है।

- *शेष पृष्ठ 5 पर*

कुम्भ मेला : 15 जनवरी से 4 मार्च, 2019

प्रयागराज कुम्भ में वैदिक साहित्य

सैक्टर 14 प्लाट नं. 75-77 तुलसी मार्ग (प.), सै. मैजिस्ट्रेट कार्यालय के बराबर, कुम्भ मेला क्षेत्र	सैक्टर 19 सच्चा आश्रम के सामने निकट सै. कार्यालय, कुम्भ मेला क्षेत्र

वेद-स्वाध्याय

दो प्रकार की वायुएँ

द्वाविमौ वातौ वात आ सिन्धोरा परावतः।
दक्षं ते अन्य आ वातु परान्यो वातु यादृपः।। -ऋ. १/१३७/२
ऋषिः कश्यपः ।। देवता - विश्वेदेवाः ।। छन्दः अनुष्टुप्।।

शब्दार्थ - इमौ द्वौ = ये दो प्रकार की, **वातौ** = वयुएँ, **वातः** = बहती हैं, एक वायु, **आ सिन्धोः** = हृदय तक चलती है और दूसरी, **आ परावतः** = बाहर के वायुमण्डल तक चलती है। **अन्यः** = उनमें एक, **ते** = तेरे लिए, **दक्षम्** = बल, **आवातुः** = अन्दर बहा लाये और **अन्यः**= दूसरी, **यत् रपः**= जो दोष-बुरा है उसे, **परावातु** = बाहर बहा ले-जाए।

विनय- हे मनुष्य ! तुझमें दो वायु चल रही हैं । तुझमें श्वास और प्रश्वास रूप में प्राण की दो प्रकार की गति हो रही है । श्वास द्वारा बाहर का शुद्ध वायु तेरे अन्दर के सिन्धु स्पन्दनशील हृदय तक आता है और प्रश्वास द्वारा अन्दर का दूषित वायु बाहर 'परावत्' तक पहुँचने है । हमारे अन्दर हृदय वह 'सिन्धी'-स्थान है जहाँ कि सैकड़ों रुधिरवाहिनी नाड़ीरूपी नदियाँ आ-आकर मिलती हैं और बाहर 'परावत्' वह वायुमण्डल नामक स्थान है जो वायु का अपार अटूट भण्डार है । एवं, ये जो परवात् से सिन्धु तक और सिन्धु से परवात् तक दो वायु हममें निरन्तर चल रही है, ये ही हमारे जीवन का आधार हैं, क्योंकि इनमें से पहली वायु-श्वास हमारे सिन्धु में बाहर से प्राण और नवजीवन लाती है और हमारे रुधिर के एक-एक कण को नव-बल से संयुक्त कर देती है (दूसरी वायु हमारे रुधिर में से, सारे शरीर में से, सब मल, दोष, विकार, को बहा ले-जाती है और बाहर परवात् में फेंक देती है । एवं, हमारा जीवन बढ़ रहा है, हम नित्य अधिक-अधिक बलवान् और अधिक-अधिक नीरोग होते जा रहे हैं । पर हे मनुष्य ! यह द्विविध प्राणक्रिया केवल तेरे भौतिक जीवन का सिद्धान्त नहीं है, किन्तु तेरे मानसिक और आत्मिक जीवन का रहस्य भी इसी में है। तु जानता नही है कि सब महामना महापुरुष अपने श्वास द्वारा केवल शारीरिक शक्ति को नहीं, किन्तु उत्साह, धैर्य, बल, सत्य, प्रेम आदि सब मानसिक और आत्मिक सद्भावों को अन्दर ले रहे हैं, तथा प्रश्वास द्वारा सब मन्दता, कायरता, अशक्ति, झूठ, घृणा आदि अभी असद्भावों को बाहर निकाल रहे हैं और इसीलिय वे महान् हुए हैं । प्राण के साथ मन ऐसा जुड़ा हुआ है कि तू श्वास के साथ जो सोचेगा वह तुझमें आ बसेगा और जिसे प्रश्वास के साथ ध्यान करेगा वह बाहर निकल जाएगा। तनिक अपनी प्रार्थना में तू इस सिद्धान्त का उपयोग करके देख । जिसे बसाना चाहता है उसे श्वास के साथ चित्रित करके देख और जो अशुभ विचार टलता ही नहीं है उसे उसके आने पर बार-बार प्रश्वास के साथ बाहर करके देख, तो तुझे निःसन्देह अदभुत सफलता मिलेगी। एवं, अपने व्यायाम में, प्राणायाम में और प्रार्थना में तू इस जगदव्यापक जीवन-सिद्धान्त का उदा उपयोग कर। तू देख कि तू अपनी इस द्विविध प्राणक्रिया द्वारा अनन्त शक्ति-भण्डार से जुड़ा हुआ है और तू इस भण्डार से अपने प्रत्येक श्वास द्वारा यथेच्छ बल पा सकता है और अपने प्रत्येक प्रश्वास द्वारा उस पवित्रता कारक महा पारावर में अपनी तुच्छ मलिनताएँ फेंककर सदा पवित्र होता रह सकता है, अतः हे मनुष्य! तू उठ और अब अपने प्रत्येक श्वास और प्रश्वास के साथ नित्य उन्नत और नवजीवन-सम्पन्न होता जा।

-: साभार :- वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

सबरीमला मन्दिर विवाद : कितनी आस्था-कितना षडयन्त्र

2 जनवरी की सुबह हर रोज की तरह ठंड थी पर अचानक माहौल तब गरमा गया जब ये खबर आई कि केरल के सबरीमाला मंदिर में भारी विरोध के बीच 50 वर्ष से कम उम्र की दो महिलाओं ने प्रवेश कर इतिहास रच दिया। बिंदु और कनकदुर्गा नाम की इन दो महिलाओं ने आधी रात को मंदिर की सीढ़ियां चढ़नी शुरू की और मुंह अँधेरे भगवान के दर्शन किए। इसके बाद बढ़ते विवाद की आशंका को देखते हुए मंदिर को अगले 2 दिन के लिए बंद कर दिया गया।

पिछले काफी समय से सबरीमाला मंदिर विवाद देश की सुर्खियाँ बना हुआ है। जिसमें आस्था है, कोर्ट और महिलाएं हैं, दिखने में तो ये इस मुद्दे के मूल विषय है, लेकिन इसमें राजनीति और षड्यंत्र से भी इंकार नहीं किया जा सकता। क्योंकि मन्दिर में अन्दर जाने का आन्दोलन चला कौन रहे हैं? रेहाना फातिमा नाम की मुस्लिम महिला और रोज मैरी नाम की ईसाई महिला। महिलाओं के प्रवेश के नाम पर चल रहे इस मंदिर में ऐसा क्या है कि ईसाई और इस्लाम धर्मों को मानने वाले तथाकथित विचारक भी मंदिर में घुसने को लालायित हैं?

इसके लिए सबसे पहले केरल का धार्मिक संतुलन समझना होगा और इस बात से शायद कोई अनजान नहीं होगा कि यह सत्तर के दशक से ईसाई और इस्लाम के मानने वाले के लिए धर्मांतरण की सबसे उपजाऊ जमीन बनी हुई है। धर्मांतरण की जमीन में सबरीमाला मंदिर सबसे बड़ी रुकावट बना हुआ खड़ा है। इसलिए इस मामले को ऐसे समझिये कि मंदिर में प्रवेश पाने के पीछे नीयत धार्मिक नहीं, बल्कि यहां के लोगों की मंदिर के प्रति सदियों पुरानी धार्मिक आस्था परम्परा को तोड़ना है। इस कारण बार-बार नये तमाशे लेकर स्थानीय लोगों की आस्था को चोट पहुंचाने का काम चल रहा है। कारण सबरीमला उन मंदिरों में से हैं जहाँ जातीय भेदभाव नहीं है। इस मंदिर के रिवाज अनूठे और अलग है, यहां दर्शन के दौरान भक्त ग्रुप बनाकर प्रार्थना करते हैं। एक दलित भी इस प्रार्थना को करवा सकता है और अगर उस समूह में कोई ब्राह्मण है तो वह भी उसके पैर छूता है। इस जाति विहीन व्यवस्था का नतीजा है कि इलाके के दलितों और आदिवासियों के बीच मंदिर को लेकर अटूट आस्था है और यही आस्था इन धर्मान्तरण के खलिफाओं के रास्ता का काँटा बनी हुई है।

बताया जाता है कि यहाँ जब कोई दीक्षा लेता है तो उसे स्वामी कहा जाता है। यानी अगर कोई रिक्शावाला दीक्षा ले तो उसे रिक्शेवाला बुलाना पाप होगा इसके बजाय वो स्वामी कहलायेगा। इस परंपरा ने एक तरह से सामाजिक क्रांति का रूप ले लिया। मेहनतकश मजदूरी करने वाले और कमजोर तबकों के लाखों-करोड़ों लोगों ने मंदिर में दीक्षा ली और वो स्वामी कहलाये।

ये तो थी आस्था, अब षड्यंत्र ये है कि मंदिर के बाहर मुस्लिम महिलाएं कतार में खड़ी है, जिन्हें इस्लाम के आरंभिक काल से मस्जिद में जाने की इजाजत नहीं है वे मंदिर में जाने का अधिकार मांग रही हैं। क्योंकि वह जानती है कि मंदिर प्रशासन इसकी अनुमति देगा नहीं और आसानी से यह सन्देश सभी जगह चला जायेगा कि भगवान अयप्पा में कोई शक्ति नहीं है और वो अब अशुद्ध हो चुके हैं। अगर सबरीमला की इस पुरानी परंपराओं को तोड़ दिया गया तो धर्मान्तरण करने वाली मिशनरियां अपना प्रचार आसानी से कर सकेगीं। इस वजह से इस मामले में स्पष्ट रूप से राजनीति और एक षड्यंत्र से इनकार नहीं किया जा सकता क्योंकि पेशे से पत्रकार कविता जक्कल, मुस्लिम विचारक रेहाना फातिमा, और मैरी स्वीटी यदि सच में महिलाओं के हक की बात करने वाली है तो क्यों नहीं अभी तक किसी मस्जिद के द्वार मुस्लिम महिलाओं के लिए खटकाये?

..... मन्दिर के बाहर मुस्लिम महिलाएं कतार में खड़ी है, जिन्हें इस्लाम के आरंभिक काल से मस्जिद में जाने की इजाजत नहीं है वे मंदिर में जाने का अधिकार मांग रही है। क्योंकि वह जानती है कि मंदिर प्रशासन इसकी अनुमति देगा नहीं और आसानी से यह सन्देश सभी जगह चला जायेगा कि भगवान अयप्पा में कोई शक्ति नहीं है और वो अब अशुद्ध हो चुके हैं। अगर सबरीमला की इस पुरानी परंपराओं को तोड़ दिया गया तो धर्मान्तरण करने वाली मिशनरियां अपना प्रचार आसानी से कर सकेगी। इस वजह से इस मामले में स्पष्ट रूप से राजनीति और एक षड्यंत्र से इनकार नहीं किया जा सकता क्योंकि पेशे से पत्रकार कविता जक्कल, मुस्लिम विचारक रेहाना फातिमा, और मैरी स्वीटी यदि सच में महिलाओं के हक की बात करने वाली है तो क्यों नहीं अभी तक किसी मस्जिद के द्वार मुस्लिम महिलाओं के लिए खटकाये?.....

यह कोई नई साजिश नहीं है बताया जाता है कि 80 के दशक में सबरीमला मंदिर के प्रांगण में ईसाई मिशनरियों ने रातों रात एक क्रॉस गाड़ दिया था। फिर उन्होंने इलाके में परचे बांट कर दावा किया कि यह 2000 साल पुराना सेंट थॉमस का क्रॉस है इसलिये यहां पर एक चर्च बनाया जाना चाहिये। यही नहीं सबरीमाला मन्दिर की एक मान्यता यह भी कि मन्दिर में पूरे विधि-विधान से पूजा करने वालों को मकर संक्रांति के दिन एक विशेष चंद्रमा के दर्शन होते हैं और इस दिन यहाँ श्रद्धालुओं का बड़ा भारी जमावड़ा भी होता है। इसी की देखा-देखी इन धर्मान्तरण की फसल काटने वाले ने सबरीमला मंदिर के आसपास चर्च में भी मकर संक्रांति के दिन फर्जी तौर पर 'चंद्र दर्शन' कार्यक्रम आयोजित कराए जाने लगे।

आज सुप्रीमकोर्ट के आदेश के बावजूद भी यह इतना बड़ा मसला इसलिये बना दिखाई दे रहा है क्योंकि वो समझ रहे हैं कि इस पूरे विवाद की जड़ में नीयत क्या है। इसलिए यह लोग बार-बार इस मुद्दे को उबालकर गर्म रखना चाहते हैं। सबरीमाला मन्दिर विवाद सिर्फ मन्दिर और महिलाओं तक सीमित नहीं है इसका दायरा राजनीति और षड्यंत्र तक फैलता है जो लोग आज इस मामले में टीवी पर बैठकर आस्था से तर्क करना चाहते है तो उन्हें समझना होगा कि कुछ आस्था में तर्क-वितर्क नही चलते, क्योंकि यदि एक भी दिन टीवी पर खुलकर तर्क-वितर्क हुआ तो शायद इस्लाम, ईसाई से जुड़े बुद्धिजीवी एक भी तर्क के सामना नहीं कर पाएंगे।

हालाँकि मैं सबरीमाला मंदिर के पुजारियों की इस हट से सहमत नहीं हूँ कि 10 से 50 वर्ष के बीच महिलाएं अपवित्र होती हैं क्योंकि सौ अपराध करके भी कोई आदमी अगर अपवित्र नहीं और मंदिर जा सकता है तो कोई लड़की सिर्फ माहवारी की वजह से कैसे अपवित्र हो जाती है? मंदिर के पुजारियों को अपने तर्क बदल लेने चाहिए। हाँ यदि महिलाएं मन्दिर में स्वयं ही आने की इच्छुक नहीं हैं और जो सुप्रीमकोर्ट के फैसले के बावजूद भी अपनी किसी श्रद्धा के कारण मन्दिर ने नहीं जाना चाहती उन पर दबाव बनाया जाना भी गलत है।

- सम्पादक

अंधविश्वास पर चढ़ी एक और बलि

छत्तीसगढ़ के कोरबा जिले में अंधविश्वास में लिप्त एक बेटे ने तंत्र क्रिया के लिए अपनी मां की बलि चढ़ा दी। हत्या कर उसका खून पीया, शव के टुकड़े किये और पूजा कर चूल्हे में जला दिया। ये खबर इसी भारत देश से हैं जो पिछले वर्ष 104 सेटेलाइट अन्तरिक्ष में एक साथ प्रेक्षित कर गर्व से दुनिया को अपने विज्ञान की ताकत से रूबरू करा रहा था। किन्तु इसके बावजूद हम शर्मिदा हैं क्योंकि जितने लोग किसी देश में आतंक या युद्ध का शिकार होते है उससे कहीं ज्यादा लोग हमारे देश में प्रतिवर्ष अंध विश्वास का शिकार हो जाते हैं। यदि इस विषय के आंकडे उठाकर देखें तो इस अंधी श्रद्धा को देखकर सिर शर्म से झुक जाता है। बावजूद इसके अंधविश्वास के इस खेल की दुदंभी बज रही है। जब ऐसे हादसे होते हैं बड़े-बड़े धर्माचार्य या तो मौन पाए जाते हैं या फिर एक कातिल को अज्ञानी कहकर मामले को रफा-दफा करने की कोशिश करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट कहती है कि भारत में 1987 से 2003 तक 2556 महिलाओं को डायन या चुड़ैल कहकर मार देने के हादसे हुए, एक दूसरी रिपोर्ट के अनुसार देश में 2011 में 240, 2012 में 119, 2013 में 160 हत्याएं अंधविश्वास के नाम पर की गयी। इसके बाद यदि राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो द्वारा पेश किये गये आंकडें देखें तो अकेले आंध्र प्रदेश और तेलंगाना दोनों राज्यों में साल 2000 से 2012 के दौरान 350 लोगों को इस शक में मार दिया गया कि वो दूसरों पर काला जादू कर रहे हैं।

इन सब आंकड़ों के बाद पिछले वर्ष की खबरें ही उठाकर देखें बड़ी अफसोस जनक खबरें मिलती हैं, राजस्थान के भरतपुर के वैर में एक बाबा ने तांत्रिक विद्या हासिल करने के लिए अपने ही पोते की बलि दे दी थी। जयपुर में पोते की चाह में एक दादी ने अपनी ही एक मासूम पोती को पानी के टैंक में डुबोकर मार दिया था। तो राजस्थान के ही जोधपुर में रमजान के महीने में एक शख्स ने अल्लाह को खुश करने के लिए अपनी ही 4 साल की मासूम बेटी की बलि दे दी थी।

अंधविश्वास और तंत्र क्रिया का यह खेल हत्या तक ही सीमित नहीं हैं पिछले वर्ष ही मध्य प्रदेश के शहडोल में कैदी ने जेल के अंदर बने देवी मंदिर में अपनी जीभ काटकर चढ़ा दी थी तो जांजगीर चंपा में एक महिला ने शिव मंदिर में अपनी जीभ काटकर चढ़ा दी थी। एक घटना बिहार के दरभंगा जिला में हुई जहाँ चैती दुर्गा पूजा के दौरान अंधविश्वास की पराकाष्ठा का अविश्वसनीय नमूना देखने को तब मिला जब एक युवती ने गाँव में स्थापित मां दुर्गा के चरणों में अपनी आंख चढ़ाने का प्रयास करने लगी थी। इसके अलावा तेलंगाना के हैदराबाद में एक शख्स ने एक तांत्रिक के कहने पर चंद्र ग्रहण के दिन पूजा की और अपने बच्चे को छत से फेंक दिया था।

....अंधविश्वास के सहारे लूट और हत्याओं का सिलसिला जारी है। विडम्बना देखिये देश में किसी भी साम्प्रदायिक हिंसा या उसमें हुई किसी एक मौत के लिए महीनों कार्यक्रम चल सकते है, उस पर कड़े कानूनों की मांग हो सकती है लेकिन अंधविश्वास के कारण लगातार हो रही हत्याओं और लूट बलात्कारों पर एक कार्यक्रम पेश नहीं किया जा रहा और न मीडिया के बुद्धिजीवियों की और से किसी कानून की मांग की जा रही हैं। ...

आधुनिक युग में समाज में अंधविश्वास घटने के बजाय बढ़ता जा रहा है। अंधविश्वास की अनेकों किस्म हैं, जिनमे भूत, चुड़ैल है, जिन्न हैं, वशीकरण, जादू, टोने टोटके आदि हैं जिसकी मदद से कुछ ढोंगी बाबाओं, ओझाओं और दरगाहों पर रहने वाले लोगों की रोजी चल रही है। कोई पंथ-मजहब इससे अछूता नहीं है, महत्वपूर्ण बात यह है कि अंधविश्वास फैलाने में विज्ञान से शिक्षा प्राप्त डॉक्टर, इंजीनियर भी शामिल हैं। इनके अलावा देश के नेताओं लिए कुछ कहना सुनना बेकार है क्योंकि उन्हें सिर्फ वोट से मतलब चाहे समाज इससे और ज्यादा गर्त में क्यों न चला जाये। क्या हम ऐसे डॉक्टरों और इंजीनियरों या नेताओं से यह अपेक्षा कर सकते हैं कि वे अंधविश्वास के खिलाफ खड़े हो सकेंगे?

शायद इसी कारण सरकारें मौन हैं और मीडिया ऐसे ढोंगियों के प्रसार का बड़ा माध्यम और सहयोगी बन चुका है। इसी अनदेखी का ही नतीजा है कि अंधविश्वास फैलाने वालों का बड़ा नेटवर्क इंटरनेट से लेकर मीडिया और प्रिंट मीडिया पर छाया हुआ है। नतीजा ज्यादातर लोग डॉक्टर से अधिक ऐसे ढोंगी तांत्रिकों पर विश्वास करने लगे हैं। इन बहुरूपियों की शिकार अधिकांश महिलाएं हो रही है और महिलाओं के जरिए पुरुष भी इनके शिकार बन रहे हैं। ये किसी प्रकार के आंतक से कम नहीं हैं क्योंकि इसमें भी भय का सिद्धान्त सर्वोपरी बनाया जा रहा है इस आतंक की शिकार महिलाओं की आबरू लूटी जा रही और पुरुषों से धन की उगहाई की जा रही है।

अंधविश्वास के सहारे लूट और हत्याओं का सिलसिला जारी है। विडम्बना देखिये देश में किसी भी साम्प्रदायिक हिंसा या उसमें हुई किसी एक मौत के लिए महीनों कार्यक्रम चल सकते है, उस पर कड़े कानूनों की मांग हो सकती है लेकिन अंधविश्वास के कारण लगातार हो रही हत्याओं और लूट बलात्कारों पर एक कार्यक्रम पेश नहीं किया जा रहा और न मीडिया के बुद्धिजीवियों की ओर से किसी कानून की मांग की जा रही हैं।

अंधविश्वास के कारण हालात दिन पर दिन बदतर होते जा रहे है सरकारों को समझना होगा कि देश में चुनौती सिर्फ सत्ता का निर्माण करना नहीं है बल्कि आज हम जिस आधुनिक सदी में रह रहे है, जीवन जी रहे है उसके अनुकूल एक अंधविश्वास रहित समाज का निर्माण करना भी किस चुनौती से कम नहीं है। आज हमारे इस गणतंत्र भारत की सभी राज्यों की सरकारों और केंद्र सरकार से अनुरोध है कि शिक्षा प्रणाली में अंधविश्वास पर एक विषय शामिल जरुर किया जाना चाहिए ताकि अंधविश्वास और विज्ञान एक जगह समाहित न हो सके। दूसरा सभी प्रकार के अंधविश्वासों पर कड़े कानून का भी निर्माण किया जाये ताकि एक माँ अपने बेटे के हाथों बेमौत न मारी जाये, एक पोते का काल उसका दादा न बन पाए और किसी मासूम बच्ची को अल्लाह के लिए कुर्बान न होना पड़े।

- राजीव चौधरी

क्रान्तिकारियों की कथा

आजाद के अन्तिम दर्शन

गतांक से आगे -

कुछ गोलियां आज़ाद के शरीर में प्रवेश कर गयीं, और कुछ इधर-उधर निकल गयीं। उनके शरीर से खून के फब्बारे छूटने लगे। (यहां यह बताना भी नितान्त आवश्यक है कि कई सिपाहियों ने राइफल की नली इधर-उधर करके गोली दागीं। 'फाल आउट' कराके तुरन्त उनके हथियार रखा लिये गए। उन्हें निहत्था कर दिया गया। बाद में पुलिस एक्ट दफा 7 के अन्तर्गत कार्रवाई करके सबको बरख़ास्त कर दिया गया।)

गोली चलाने वाले सिपाहियों की ओर मुख़ातिव होकर आज़ाद ने निवेदन किया, 'अरे हिन्दुस्तानी सिपाही भाइयो! तुम मेरे ऊपर अंधाधुन्ध गोलियां क्यों बरसा रहे हो? मैं तो तुम्हारी ही आज़ादी के लिए लड़ रहा हूं। कुछ समझो तो सही!'

तब तक राजभक्त सिपाहियों को सेकण्ड राउण्ड 'फायर' करने का आदेश भी मिल चुका था। गोलियां फिर बरसने लगीं। आज़ाद ने हतोत्साहित होकर कहा, 'तुम चलाए जाओ गोली। तुम मेरे भाई हो, मैं तुम्हें न मारूंगा।'

अब तक आज़ाद का निशाना पेड़ की आड़ लिए छह फुटा नॉटबावर ही था। जब भी उसके शरीर का कोई हिस्सा नज़र आता, उनकी गोली वहीं पड़ती। तभी 'समर हाउस' की ओर से झाड़ी में छिपे विश्वेश्वरसिंह ने फिर गोली चलाई, साथ ही गाली भी दी। लोहू-लूहान आज़ाद का माउज़र बिजली की तरह गरजा और विश्वेश्वरसिंह का जबड़ा चकनाचूर कर दिया। उसे दूसरी गाली देने का मौक़ा नहीं दिया। सी.आई.डी. के असिस्टैण्ट इंस्पेक्टर जनरल ओ' कॉनर ने तुरन्त दाद दी-'बण्डरफुल शॉट!'

दोनों हाथों के बीच जबड़ा दबाए, खून से लथपथ विश्वेश्वरसिंह मैदान छोड़कर म्योर कालेज की ओर भागा। तब तक पुलिस के घेरे के सामने सैकड़ों विद्यार्थियों की भीड़ जमा हो गयी थी। सभी उस क्रांतिकारी का नाम जानने के लिए आकुल थे, जिसे कई पुलिस अफसर डाकू की संज्ञा दे रहे थे। भीड़ तितर-बितर करने के लिए मैज़र्स ने कलक्टर बमफोर्ड से गोली चलाने की अनुमति चाही। बमफोर्ड ने मना कर दिया।

आज़ाद के पास केवल 4 मैगजीनें थीं। वे 39 राउंड फायर कर चुके थे। हाफज़ा इतना दुरुस्त था कि निशाने पर गोली दागते जाते थे, मिगनती करते जाते थे। अब चेम्बर में केवल एक गोली शेष थी। एक क्रानितकारी दल के स्वाभिमानी सेनापति होने के नाते 32 मिनट तक सशस्त्र पुलिस से मोरचा लेते हुए उन्होंने माउज़र की नली अपनी बायीं कनपटी से भिड़ा ली और ट्रिगर दबा दिया। क्रान्ति का एक

- क्रमशः

- धर्मेन्द्र गौड़ : साभार :

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने

क्रान्तिकारी आन्दोलन के अधखुले पन्ने : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्त करने के लिए मो. नं. 9540040339 पर सम्पर्क करें।

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

हिन्दू समाज का जागृत प्रहरी बना.....

जा रहा है उनके अन्दर हमारे ही ग्रंथो के प्रति नकारात्मक भावों को पिरोने की कोशिश की जा रही है। हालाँकि हिन्दू धर्म से जुड़े अनेकों बाबाओं के स्टाल आपको पुस्तक मेले में देखने को मिलेंगे। एक पल को आपका हृदय गर्व से भी भर उठेगा किन्तु जब आप देखेंगे कि उन सभी स्टालों पर उनके भक्तगण सिर्फ बाबाओं के कथित चमत्कारों से जुडी पुस्तकें या फिर हमारे ही मिलावटी ग्रन्थ वहां बेचें जा रहे है, कोई आसाराम को निर्दोष बताता मिलेगा तो कोई राधे माँ का गुणगान करता दिख जायेगा। ओशो का अश्लील साहित्य बिकता मिलेगा। किन्तु हिंदी साहित्य हाल में केवल और केवल आर्यसमाज ही राष्ट्रवादी, समाज सुधारक, नवचेतना, सदाचारी, पाखंडों से मुक्ति दिलाने वाला, विधर्मियों के जाल से बचाने वाला साहित्य वितरित करता दिखेगा।

सही अर्थों में 13 जनवरी तक चलने वाले इस विश्व पुस्तक मेले में एक बार फिर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में आर्यसमाज ही हिन्दू समाज का जागृत प्रहरी बनकर खड़ा है। जागृत प्रहरी क्यों बना, इस बात से भी परिचित होना जरुरी है क्योंकि समाज के अतीत, वर्तमान और भविष्य का हमेशा ज्ञान द्वारा मार्गदर्शन होता रहा है और इसमें पुस्तकों की सबसे प्रभावशाली भूमिका रही है। मसलन अतीत से लेकर अभी तक ज्ञान की अनावरत बहती धारा का नाम पुस्तक है और इसका संगम वर्तमान काल में पुस्तक मेले हैं। आप सभी को ज्ञात होगा मध्यकाल से लेकर आर्य समाज की स्थापना तक ज्ञान की अनावरत धारा को कुछ लालची और विधर्मी लोगों द्वारा अज्ञानता का कचरा डालकर मैला करने का कार्य वृहद् रूप से हुआ, हमारे अनेक ग्रंथो में मिलावट की गयी, सृष्टि के आदि ग्रन्थ मनुस्मृति को अशुद्ध किया गया और तो और हमारे धार्मिक ग्रन्थ रामायण गीता और महाभारत में भी हमारे महापुरुषों के जीवन चरित्र से लेकर कथानक को अशुद्ध किया गया।

फलस्वरूप समाज अपने विशुद्ध वैदिक ज्ञान से दूर हुआ अज्ञानता को ही सत्य स्वीकार कर हमने वर्षों की गुलामी की बेड़ियों को अपना हार समझ लिया। इसके पश्चात स्वामी दयानन्द सरस्वती जी आये। उन्होंने सर्वप्रथम वेदों को सर्वोच्च प्रमाण मानकर उनके भिन्न प्रत्येक बात को पाखण्ड घोषित किया और अज्ञानता को दूर करने का कार्य किया। हमें अपनी असली संस्कृति और धर्म से परिचय कराया और नया विशुद्ध साहित्य रच हमें एक अस्त्र के रूप में दिया।

तब से लेकर आज तक आर्य समाज स्थान-स्थान और समय-समय पर अज्ञानता के रण में ज्ञान के इन अस्त्रों का प्रयोग कर समाज में चेतना जगाने का कार्य कर रहा है। इसी क्रम में वर्षों पहले जब ये एहसास किया गया कि देश भर में लगने वाले पुस्तक मेलों में विधर्मी लोग अपनी स्वरचित पुस्तकों के माध्यम से हमारे धर्म और संस्कृति पर हमला कर रहे हैं तब यह फैसला लिया गया कि क्यों न आर्यसमाज भी अपने इस ज्ञान के अस्त्रों का प्रयोग पुस्तक मेले के माध्यमों से करें।

तत्पश्चात देश भर लगने वाले पुस्तक मेलों में दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्ष ग्रंथो, विशुद्ध मनुस्मृति से लेकर रामायण और महाभारत सहित वैदिक साहित्य के लेकर भाग लेना शुरू किया। जैसा कि आप सभी भलीभांति परिचित होंगे कि देश की राजधानी दिल्ली में तो प्रतिवर्ष सत्यार्थ प्रकाश 10 रूपये में उपलब्ध कराया जा रहा है साथ ही एक स्टाल शंका समाधान का भी रखा जाता है जिसमें वैदिक विद्वान मेले में पधारे लोगों की धर्म, आत्मा,जन्म, पूर्वजन्म से लेकर ईश्वर के निराकार होने और वेदों में गोमांस भक्षण निषेध जैसे सभी विषयों पर शंकाओं का समाधान भी करते हैं।

एक तरह से कहें तो आर्य समाज प्रतिवर्ष हिन्दू समाज के जागरण का एक प्रहरी बनकर पुस्तक मेले में जाता है। हिंदी, अंग्रेजी, बंगला एवं उर्दू में सत्यार्थ प्रकाश लोगों को उपलब्ध कराया जाता है। स्वामी दयानन्द जी के अन्य ग्रंथो संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, आर्योद्देश्यरत्न माला आदि को भी सस्ते मूल्य पर उपलब्ध कराया जाता है। हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी आर्यसमाज पुस्तक मेलों के माध्यम से वैदिक धर्म के नाद को आप सबके सहयोग से विश्व के कोने-कोने तक पहुँचायेगा।

आप सभी से भी अनुरोध है एक बार पुस्तक मेले में जरुर पधारिये और आर्य समाज के स्टाल पर आकर इस वैदिक नाद को और अधिक गुंजायमान करते हुए कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन अवश्य करें।

- विनय आर्य, महामन्त्री

सभा द्वारा परोपकारिणी सभा को प्रदान किए गए स्टाल पर सत्यार्थ प्रकाश का प्रदर्शन करते महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री कन्हैयालाल आर्य जी, दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य, श्री प्रेम अरोड़ा जी, श्री वेदव्रत जी, श्री वीरेन्द्र सरदाना जी एवं अन्य महानुभाव स्टालों पर उमड़ते युवा साहित्य प्रेमी।

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने हेतु साहित्य प्रचार यज्ञ में आहुति देने वाले महानुभावों की सूची

गतांक से आगे :-

5. ठाकुर विक्रम सिंह ट्रस्ट	21000	8. श्री प्रदीप आर्य, त्रिनगर	500
6. आर्यसमाज ग्रेटर कैलाश-2	15000	9. आर्यसमाज मदनगिर नई दिल्ली	2000
7. सूबेदार करतार सिंह जी, सोनीपत	21000	10. श्री सत्यवान, तुगलकाबाद	500

- क्रमशः

100 सत्यार्थ प्रकाश 10-10 रुपये में वितरित करने के लिए 2000/- रुपये सहयोग राशि की आवश्यकता है। अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अपने परिवार, आर्यसमाज और अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम **15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001** के पते पर भेजें। आप अपना सहयोग सीधे बैंक खाते में भी जमा करा सकते हैं -

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'

खाता सं. 0133002100005251 पंजाब नेशनल बैंक,

IFSC - PUNB0013300 MICR - 110024092

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री मनोज नेगी जी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप व्हाट्सएप्प करें या aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें। समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है। - *महामन्त्री*

सत्यार्थ प्रकाश अल्प मूल्य केवल मात्र 10/- रुपये में देने के लिए अपनी ओर से आर्थिक सहयोग प्रदान करें

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का अमूल्य ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश जोकि 50/- रुपये का है, सभा को 30/- रुपये में प्राप्त होता है। आप द्वारा प्रदान की गई 20/- सब्सिडी (छूट) से इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश को विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर मात्र 10 रुपये में उपलब्ध कराया जाता है। अतः आप सभी दानी महानुभावों एवं आर्य संस्थाओं से निवेदन है कि अधिकाधिक प्रतियां 10/- में उपलब्ध कराने हेतु अधिकाधिक छूट सहयोग प्रदान करें। आप अपना सहयोग सभा कार्यालय - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर में नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट/मनिआर्डर के माध्यम से भेज सकते हैं तथा सभा के निम्नांकित बैंक खाते में सीधे भी जमा करा सकते हैं। कृपया अपनी सहयोग राशि का चैक 'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम बनाएं।

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 0133002100005251 पंजाब नेशनल बैंक, IFSC - PUNB0013300 MICR - 110024092

कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त **श्री मनोज नेगी जी मो. 9540040388** को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लिप व्हाट्सएप्प करें या aryasabha@yahoo.com पर भेजकर राशि की रसीद मंगा लेवें। समस्त सहयोगी महानुभावों की सूची आर्यसन्देश साप्ताहिक में प्रकाशित की जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को दिया गया दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत छूट प्राप्त है।

केरल जो कभी वैदिक धर्म का केन्द्र था, वहां गत 100 वर्षों में क्या-क्या घटित हुआ, उन सत्य घटनाओं पर आधारित वीर सावरकर जी का प्रामाणिक उपन्यास अवश्य पढ़ें।

'मोपला'

प्राप्त करने के लिए सम्पर्क करें-
वैदिक प्रकाशन
दूरभाष: 23360150, 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

प्रयागराज कुम्भ में आर्यसमाज .....

भला देश के अन्दर एक विशाल भू-भाग पर इतना बड़ा आयोजन हो और आर्य समाज की भूमिका न हो यह कैसे संभव हो सकता है। किन्तु इससे भी बड़ा सवाल यह है कि इस महान आयोजन का आध्यात्मिक लाभ आर्य समाज किस तरह लोगों तक पहुंचा सकता है। मन में इसी सवाल के साथ सैंकड़ों वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हरिद्वार कुम्भ मेले में पाखण्ड खंडिनी पताका फहराकर हजारों व्यक्तियों तक वैदिक विचारधारा को पहुँचाया था।

भले ही पौराणिक कहानियों में कुम्भ के आयोजन को लेकर अनेकों कथाएं प्रचलित हो जिनमें से सर्वाधिक मान्य कथा देव-दानवों द्वारा समुद्र मंथन से प्राप्त अमृत कुंभ से अमृत बूँदें गिरने को लेकर है। किन्तु यह सिर्फ एक प्रचलित कथा हैं असल में भारत ज्ञान की भूमि थी और कुम्भ जैसे आयोजन करने का उद्देश्य हमारे पूर्व विद्वानों का यह था कि ऐसे आयोजन में विचारों का मंथन करके ज्ञान का अमृत निकाला जाये। इसमें विश्व भर के विद्वान अपने ज्ञान, तर्क मान्य एवं अमान्य विषयों पर विचारों का मंथन किया करते थे। अंत में जो सत्य होता उसे मान्यता प्रदान करते और उस सत्य को अमृत समझ जीवन में उतारते।

इस महान व्यवस्था और आयोजन को समय के साथ कलंकित सा होना पड़ा जब पौराणिक कथाओं को सत्य मानकर अनेकों ढोंगियों, बाबाओं के वेश में जादू दिखाकर इसे अपनी धार्मिक शक्ति बताकर अंधविश्वास को प्रोत्साहित कर कुम्भ जैसे महान अवसर को सिर्फ गंगा स्नान और पूजा प्रार्थना तक सिमित कर दिया। इससे उनका व्यक्तिगत लाभ पता नहीं कितना हुआ पर आमजन सनातन वैदिक धर्म के सत्य स्वरूप से दूर होता चला गया।

जब स्वामी जी यह सब देखा तो उनका मन द्रवित हो गया गुरु से धर्म प्रचार की प्रतिज्ञा करके निकले स्वामी दयानन्द जी ने विचार किया कि छोटे-छोटे स्थानों में पांच-सात लोगों को समझाने से बेहतर है कि एक जगह इकठ्ठा हुए सभी विद्वानों संतों से धर्म चर्चा करके विचारों का मंथन करके क्यों न उन्हें वैदिक धर्म के सत्य स्वरूप का अमृत पिलाया जाये ताकि देश भर में एक ही बार में वैदिक सिद्धांतों की चर्चा फैल जाये। इस विचार से समाज को सत्य का सन्देश देने हेतु 1866 में जब स्वामी जी हरिद्वार कुम्भ में पहुंचे तो अपार भीड़ साधुओं के विशाल अखाड़ों को देखा तो उनका साहस टूटने लगा। किन्तु उनकी अंतरात्मा ने आवाज दी कि साहस मत तोड़, सब कार्य पूर्ण होगा, क्या एक अकेला सूर्य संसार के सभी अंधकार को दूर नहीं कर देता?

आवाज सुनते ही उस दिव्य आत्मा ने अपने निवास स्थान के आगे एक झंडे पर पाखण्ड खंडिनी पताका लिखकर दिया, पाखंडों, अंधविश्वासों अवतारों श्राद्ध आदि पर जब स्वामी जी ने बोलना आरम्भ किया उस धार्मिक जन समुदाय में एक प्रकार की हलचल मच गयी अनेकों लोग धर्म की सच्चाई के सम्बन्ध में विचार करने लगे। अकेले स्वामी जी का यह प्रताप था कि सत्य ने असत्य को और ज्ञान ने अज्ञानता को हिलाकर रख दिया था।

स्वामी के निर्वाण के बाद इस कार्य को आर्य समाज के महानुभावों ने समय-समय पर संचालित रखा और इसे गति देने का कार्य किया। पंडित लेखराम जी, स्वामी श्रद्धानन्द ने ऐसे अवसर पर ही हरिद्वार में पाखण्ड-खण्डिनी पताका गाड़ कर अपने महान् और विशाल मिशन की विजय-दुंदुभि बजाई थी। वर्तमान समय में धर्म-कर्म और ईश्वर के नाम पर भटक कर अशांत जीवन जी रहे है या फिर ढोंगियों के चंगुल में फंसकर धन आदि की हानि करते नजर आ रहे है. यही एक ऐसा अवसर है जब हम अपनी प्राचीन वैदिक संस्कृति, वैदिक धर्म के सन्देश और हमारे विद्वान वैज्ञानिक ऋषियों की विचारधारा को करोड़ों के बीच प्रसारित कर सकते है। क्योंकि आज भी सत्य ज्ञान के आभाव में अंधविश्वास, पाखण्ड कुरीतियाँ और तरह-तरह के धर्म और भगवान उत्पन्न होते जा रहे है।

इसलिए इस अवसर पर सत्य ज्ञान एवं वैदिक विचारधारा को प्रवाहित करने हेतू पुनः प्रयागराज कुम्भ में वैदिक विद्वान् सन्यासी, विदुषी आचार्य, गुरुकुल के विद्यार्थियों समेत आमंत्रित किया गया है। इसके साथ ही देश विदेश से आर्यजनों की उपस्थिति में कार्यक्रम स्थल पर वैदिक साहित्य एवं सामग्री हेतु भव्य स्टाल सुन्दर आकर्षक यज्ञशाला एवं ज्ञानवर्धक कार्यक्रम प्रस्तुत कर ओ३म ध्वज और पाखंड खंडिनी पताका को फहराया जायेगा।

कुम्भ मेला : 15 जनवरी से 4 मार्च, 2019

प्रयागराज कुम्भ में वैदिक साहित्य

सैक्टर 14 प्लाट नं. 75-77	सैक्टर 19
तुलसी मार्ग (प.), सै. मैजिस्ट्रेट	सच्चा आश्रम के सामने
कार्यालय के बराबर, कुम्भ मेला क्षेत्र	निकट सै. कार्यालय, कुम्भ मेला क्षेत्र

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, जिला आर्य प्रतिनिधि सभा प्रयाग, आर्यवीर दल एवं स्थानीय आर्यसमाजों के सहयोग से इस वर्ष आयोजित होने वाले कुम्भ मेले में आर्यसमाज की उपस्थित दर्ज कराने एवं महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के मतव्यों, मान्यताओं, विचारों को जन-जन तक पहुंचाने के लिए आर्यसमाज की ओर से दो स्थानों पर प्रचार स्टाल का आयोजन किया जा रहा है। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा भी इस कार्य में पूर्णतः सहयोगी बनते हुए वैदिक साहित्य का प्रचार करने जा रही है। यह कुम्भ मेला प्रयागराज (इलाहाबाद) में 15 जनवरी से 19 फरवरी तक आयोजित होगा। उ.प्रदेश शासन की ओर से मेले की वृहद् तैयारियां तथा चाक-चौबन्द सुरक्षा व्यवस्था की गई है।

समस्त आर्यजनों, महर्षि दयानन्द के अनुयायिओं, आर्यसमाज के कर्मठ कार्यकर्ताओं, अधिकारियों एवं सदस्यों तथा समस्त पाठकवृन्दों से निवेदन है कि इस वर्ष के कुम्भ मेले में आर्यसमाज के प्रचार स्टाल पर अवश्य ही पहुंचकर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करें एवं कुम्भ में प्रचार के माध्यम से एक बार फिर पाखण्ड खण्डिनी पताका फहराने में सहयोगी बनें। मेले में किसी भी प्रकार के सहयोग के लिए श्री अजेय कुमार मेहरोत्रा (9305990143), श्री राजेन्द्र कपूर जी (7007796112, 8687735001) अथवा श्री सतीश चड्डा जी (9540041414, 93 13013123) से सम्पर्क करें।

- विनय आर्य, महामन्त्री, दिल्ली सभा

MUTUAL FUNDS/SIP, INSURANCE, MEDICLAIM,
BONDS, PSM, NPS, F.D., TAX SAVING,
आदि के लिए सम्पर्क करें - *धर्मवीर आर्य, 9810216281*

Veda Prarthana - II
Regveda - 24

Dear God, May I never give up my faith in You at any cost

- Acharya Gyaneshwarya

महे च न त्वामद्रिवः परा शुल्काय दीयसे।
न सहस्राय नायुताय वज्रिवो न शताय शतामघ।। – *सामवेद 3/6/6*

Mahe cha na tvamadrivah para shulkaya diyase.
Na sahasraya nayutaya vajrivo na shataya shatamagh.
Sam Veda 3/6/9

This Veda mantra instructs human beijngs to never give up or shortchange one's faith and trust in God and His teachings at any cost due to greed and/or the lure of money whether the wealth is measured in hundreds, measured in thousands, or measured in lacs (100,000) or crores (billions). One must always follow God's virtuous teachings as recommended in the Vedic scriptures, have high moral ideals and discipline in personal life, and follow social rules for the well functioning of the society, because all of these get us closer to God. Various sensual pleasures that can be purchased by money are all transient and insignificant when one compares it to the bliss and joy one obtains upon realization of God.

God has ultimately created all the wonderful things we enjoy in the world and He has given us instructions how to utilize them in a proper ways. God through the Vedas and other Vedic scriptures instructs us to maintain virtuous values and moral disciplines while enjoying various things made of prakriti (matter). Human beings who disobey God's instructions and acceptable moral disciplines, and instead use devious or dishonest methods (karmas) to gain objects that give transient pleasures, then become deserving of God's punishment.

Human beings whose view about life and intellect is shallow and shortsighted, they aim at things, which give transient pleasure or happiness and do not think what would be the long term results of such actions. Their main focus is on enjoyment of life 'in now and present, who knows tomorrow will even come.' They put aside and ignore the universal societal rules of truth, dharma, honesty, virtue, justice etc. and try to gain others wealth through whatever wrong means possible including deception, fear, bribing, temptation, and utilize the gained wealth for transient unworthy pleasures of senses. Such persons forget that God the Creator of the world and provider of all its gifts is All Knowing and not a simpleton who would not find out their deception and flaunting of His rules as well as not give them appropriate punishment for their wrong or sinful deeds.

In this mantra God is addressed as Vajrivah which means His strength is endless i.e. He is Almighty. Any person who obtains fulfillment of his desires by devious or bad means and breaks God's teachings, he/she without fail will receive appropriate punishment based upon God's perfect justice. When one closely examines the essential needs of human body, one would notice that they are quite limited. Our stomach is only a few inches long which to fill up requires limited amount of food, our physical body is around 5-6 feet long to cover it we need limited clothing, for our sleep, we require a bed, and our shelter a small sized space (house). If a person expands his/her needs beyond one's earnings, then the person to gain money has to either borrow or use sinful means such as lying, cheating, deception and stealing. Other unjst examples include direct or indirect bribing to gain unjust financial advantage, false recommendations from people in authority, having inside information in stock trading etc. because all of these are against societal rules of fairness, honesty and integrity. All such acts move us away from God even though we may practice religious rituals. Such acts this Veda mantra states is called giving up, shortchanging, or selling one's trust in God and His teachings due to the lure of money.

All deeds and actions that are unjust and/or sinful remain wrong even if they are performed in a temple, gurudwara, church, mosque or other types of religious or non-religious places The so called pious places are not exempt from sin just like sinful deeds done at home, school, office, factory, business, or other places of work. When people do such deeds they have forgotten God and have truly become atheists.

People forget that creature comforts and pleasures obtained from ill&gotten wealth are all transient and limited to senses but do not give inner happiness, contentment, or fulfillment to the soul. Moreover, even if the creature comforts obtained by ill-gotten wealth last 20-30-40 years, in the end at our death will be all left on the earth. Nobody has taken their wealth, houses, clothes with them in afterlife, only our soul remains. People who have done sinful deeds in this life, based on God's judgment will be reborn in lower life forms such as animals, birds, or insects. One can watch a feral street dog or cat, it has no regular house or shelter, has to hunt or scavenge for food and often goes hungry. Even if it was a pet dog or cat and had better access to food or shelter, it still is an animal without free will at the mercy of others living a life of bhoga, without an opportunity to do new karmas and move closer to God and bliss.

Dear God, please open our inner eyes and bless us with the wisdom to avoid the temptation or lure of any ill-gotten money or wealth, whether it be in thousands, millions or billions. May we never shortchange or disobey Your virtuous teachings. May we never forsake You even at the cost of death of our physical body. We will always remember that we can never deceive You. Dear God, with Your grace may we fulfill our this prayer.

To Be Continue....

महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार प्रकल्प के अन्तर्गत
देश-विदेश में वैदिक धर्म एवं भारतीय संस्कृति के प्रचार-प्रसार हेतु
प्रचारकों की आवश्यकता

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली की ओर से देश-विदेश में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार की शृंखला आरम्भ की जा रही है, जिसके लिए सुयोग्य उम्मीदवारों के आवेदन आमन्त्रित हैं। कुल पद : **भारत हेतु 20** तथा **विदेशों हेतु 5**। इच्छुक अभ्यर्थी के लिए वांछित योग्यताएं निम्न प्रकार हैं –

1. आर्य वीर दल का प्रशिक्षण प्राप्त हो। 2. गुरुकुलीय आर्ष पाठ विधि के साथ-साथ आधुनिक विषयों की भी शिक्षा प्राप्त की हो। 3 यज्ञ, भजन, प्रवचन के साथ-साथ सभी वैदिक संस्कार सम्पन्न कराने में निपुण हो। 4. आर्यसमाज के प्रचार की हार्दिक इच्छा रखता हो। 5. युवा जिनकी आयु 18 से 30 वर्ष के मध्य हो।

चयनित अभ्यर्थी की प्रथम नियुक्ति भारत के किसी भी राज्य में तथा विशिष्ट अंग्रेजी भाषा ज्ञान और कार्य के अनुभव के उपरान्त भारत से बाहर किसी भी देश में की जाएगी। पूर्ण योग्यता होने की दृष्टि में सीधे विदेशों में नियुक्ति की जा सकती है। सम्मानित मानदेय के साथ-साथ वाहन व्यय, मोबाईल व्यय, स्वास्थ्य बीमा, आवास की सुविधा प्रदान की जाएगी।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का लक्ष्य साधने की दृढ़ इच्छा रखने वाले युवा महानुभाव अपना विस्तृत आवेदन पत्र- विश्व में आर्यसमाज के प्रचार की आवश्यकता और उनकी महान इच्छा, पारिवारिक स्थिति एवं परिचय, भाषा ज्ञान, कम्प्यूटर ज्ञान, शैक्षिक योग्यता, पासपोर्ट नं., मोबाईल एवं ईमेल के साथ तत्काल रूप से **'संयोजक, महाशय धर्मपाल सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति'** के नाम – **'15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001'** के पते पर भेजें अथवा **aryasabha@yahoo.com** पर ईमेल करें।

– संयोजक, महाशय धर्मपाल
सार्वदेशिक धर्म प्रचार समिति

आओ ! संस्कृत सीखें
संस्कृत वाक्य अभ्यासः (74)
वाक्याभ्यास

गतांक से आगे....

१. उलयः = गुच्छेदारघासे
फलारामे उलयाः भवन्ति।
बगीचे में गुच्छेदार घासें होती हैं।

२. उलूलु (स्त्री) = मुखघण्टिका, लोरी
अम्बा शिशुम् उलूलुं श्रावित्वा निद्रायति।
माता बच्चे को लोरी सुलाकर सुलाती है।

३. उल्मुकः = जलती लकड़ी, अंगारा
अघोरी साधुः उल्मुकं शिरसि अधारयत्।
अघोरी साधु अंगारे को सिर पर रखता है।

४. उल्लल (वि) = डांवाडोल
जलयानम् उल्ललं जातम्।
जलयान डांवाडोल हो गया।

५. उल्लुचिंनम् = नोचना
एकेन युवकेन आरक्षिबलस्य नासिकायाः उल्लुचिंनं तम्।

एक युवक के द्वारा पुलिस का नाक नोच लिया था।

1. तनवस्त्राणि धारितवान् असीत्।
वह नये कपड़े पहने हुए था ।

२. नूतनवस्त्राणि धृत्वा सर्वान् च दर्शयित्वा सः अमोदत।
नये कपड़े पहनकर और सबको दिखाकर वह प्रसन्न हो रहा था।

३. सः मातुलस्य गृहं गच्छति स्म।
वह मामा के घर जा रहा था।

४. ऋतस्य मातुलः कारयानेन आगतवान्।
उसके मामा कार से आये थे।

५. ह्यः सायं सः तस्य अम्बा च अगच्छताम्।
कल शाम को वह और उसकी माँ दोनों गये।

– क्रमशः

आचार्य सन्दीप कुमार उपाध्याय, मो. 9899875130

प्रेरक प्रसंग
अजी! बड़े तो आप हैं

श्री रामचन्द्र देहलवीजी ही सुनाया करते थे कि एक बार रेल में यात्रा करते हुए एक यात्री पान चबाकर डिब्बे में ही थूकता रहा। जब अपने ध्येय धाम पर वह उतरा तो कुली को पुकार कर कहा, "अन्दर से मेरा सामान निकालो।"

कुली ने उसका बिस्तर निकाला। निकालते हुए बिस्तरे को इधर-उधर किया तो पान का थूक लग गया। यह देखकर यात्री बोला, "तुम बड़े मूर्ख हो, यह क्या कर दिया?"

पूज्य देहलवीजी से कुली की डाँट-डपट सही न गई। उन्होंने अपने अनूठे ढंग से कहा- "अजी बड़े तो आप ही हैं। वह बेचारा तो कुली है। देखिए, यह आप ही का तो थूक है।"

– प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु
साभार :
तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की अन्तरंग सभा बैठक
रविवार 20 जनवरी, 2019 सायं : 3 बजे

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक निर्वाचन 25 नवम्बर, 2018 के उपरान्त सभा की प्रथम अन्तरंग सभा बैठक रविवार 20 जनवरी, 2019 को आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के सभागार में सायं 3:00 बजे से आयोजित की गई है।

दिल्ली सभा के समस्त नव निर्वाचित अधिकारियों, अन्तरंग सदस्यों एवं विशेष आमन्त्रित सदस्यों से निवेदन है कि बैठक में अवश्य ही पहुंचकर अपनी उपस्थिति दर्ज कराएं एवं निर्णयों में अपनी भागीदारी प्रस्तुत करें। समस्त माननीय सदस्यों को स्पीड पोस्ट के माध्यम से विधिवत् सूचना प्रपत्र भेजे जा चुके हैं। – ***विनय आर्य, महामन्त्री***

फुटबाल नेशनल चैम्पियनशिप में द्वितीय स्थान

आर्यसमाज रानी बाग में अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ के द्वारा संचालित आर्य गुरुकुल के विद्यार्थियों ने जम्मूतवी में हुई फुटबाल नेशनल चैम्पियनशिप में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। विद्यार्थियों एवं गुरुकुल के अधिकारियों को हार्दिक बधाई।

पारिवारिक मिलन पिकनिक का आयोजन

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी सभा अधिकारियों के पारिवारिक परिचय समारोह (पिकनिक) का आयोजन 26 जनवरी को किया जा रहा है।

सभा के माननीय अधिकारीगण, सदस्यं एवं कर्मठ कार्यकर्ता महानुभाव जो इसमें भाग लेना चाहें वे कृपया सभा उप प्रधान एवं संयोजक **श्री ओम प्रकाश आर्य जी से 954004077858/ 9911155285 से सम्पर्क करें।** – ***महामत्री***

आवश्यकता है

दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों की शिरोमणि संस्था दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को अपने विभिन्न प्रकाशकीय कार्यों के लिए एक सुयोग्य सम्पादक की अवश्यकता है, जो सभा के मुख पत्र आर्य सन्देश तथा प्रकाशित होने वाले साहित्य के टाइपिंग, प्रूफरीडिंग, सैटिंग का कार्य निपुणता के साथ कर सके। आर्यसमाज एवं वैदिक परम्पराओं से ओत-प्रोत अभ्यर्थियों को प्राथमिकता दी जाएगी। इच्छुक अभ्यर्थी अपना बायोडाटो ***arya sabha@yahoo.com*** पर भेजें।

– ***महामन्त्री***

शोक समाचार

श्री रणबीर सिंह आर्य का निधन

नगर आर्यसमाज शाहदरा दिल्ली के प्रधान श्री रणबीर सिंह आर्य जी का दिनांक 5 जनवरी, 2019 प्रात: 9 बजे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ ज्वाला नगर शमशान घाट पर किया गया।

उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 13 जनवरी को कम्युनिटी हॉल, शालीमार पार्क, निकट डीसीपी ऑफिस, शाहदरा, निकट ईस्ट आजाद नगर मैट्रो स्टेशन में सम्पन्न होगी।

श्री लक्ष्मी चन्द क्वात्रा जी का निधन

आर्यसमाज फरीदाबाद सै. 19 के पूर्व प्रधान श्री लक्ष्मीचन्द क्वात्रा जी का दिनांक 2 जनवरी को प्रात: 5 बजे निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ खेड़ी रोड शमशान भूमि पर किया गया। वे लम्बे समय से अस्वस्थ चल रहे थे। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 5 जनवरी, 2019 को अग्रसेन भवन, सैक्टर-19 फरीदाबाद में सम्पन्न हुई।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। –सम्पादक

आर्यजगत् का सुप्रसिद्ध चलचित्र
सत्य की राह Vedic Path to Absolute Truth
मात्र 30/- रु. हिन्दी एवं अंग्रेजी दोनों भाषाओं में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान : वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, मो. नं. 9540040339

संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज IAS परीक्षा - 2019 एवं 2020
भाग लेने के इच्छुक विद्यार्थी ध्यान दें

आर्यसमाज के शिक्षण संस्थानों/गुरुकुलों/सेवाकेन्द्रों/बालवाड़ियों, डी.ए.वी. संस्थानों/ विद्यालयों से शिक्षा प्राप्त ऐसे प्रतिभावान छात्र/छात्राएं जो वर्ष 2019 में आयोजित होने वाली सिविल सर्विसिज एग्जामिनेशन में भाग लेना चाहते हैं, अर्थित एवं मूलभूत आवश्यकताओ के अभाव के कारणों से परीक्षा तैयारियां नहीं कर पा रहे हैं उन सबके लिए आर्यसमाज की ओर से स्वर्णिम अवसर।

महाशय धर्मपाल आर्य प्रतिभा विकास संस्थान की ओर से राष्ट्रवादी विचारधारा वाले, आर्य शिक्षण संस्थानों में शिक्षा प्राप्त सुयोग्य पात्रों को आर्थिक सहयोग एवं परीक्षा तैयारियों के लिए प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने की घोषणा की जाती है। योजना का लाभ प्राप्त करने के इच्छुक महानुभावों को एक लिखित/मौखिक एवं बौद्धिक परीक्षा पास करनी होगी। सफल परीक्षार्थियों में से प्रथम 40 अभ्यर्थियों को दिल्ली में आमन्त्रित करके, भोजन, आवास एवं तत्सम्बन्धी समस्त सुविधाएं निशुल्क प्रदान की जाएंगी तथा प्रशिक्षण की तैयारियां कराई जाएंगी। इस योजना का लाभ उठाने के इच्छुक विद्यार्थी/परीक्षार्थी अपने शैक्षिक प्रमाण पत्रों, वित्तीय स्थिति के विवरण तथा आवश्यक कागजातों की प्रति के साथ अपना आवेदन पत्र संस्थान की ईमेल आई.डी. dss.pratibha@gmail. com पर ईमेल करें। अधिक जानकारी के लिए मो. 9540002856 पर सम्पर्क करें। परीक्षा की तिथि शीघ्र ही घोषित की जाएगी। – ***व्यवस्थापक***

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली-2018
कूपनों पर एकत्र की गई राशि यथाशीघ्र भेजें

आप सभी के सहयोग सदभाव के साथ अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2018 दिल्ली का आयोजन सफलता के साथ 25 से 28 अक्तूबर तक स्वर्ण जन्यन्ती पार्क, रोहिणी में सम्पन्न हुआ। सम्मेलन के विशाल कार्य पर बहुत अधिक राशि का व्यय हुआ है। अत: सभी दानदाताओं एवं दान एकत्र करने करने वाले आर्य महानुभावों/आर्यसमाजों से निवेदन है कि वे अपनी दान राशि तथा कूपनों पर एकत्र की गई दान राशियां कूपन सहित शीघ्रतिशीघ्र सभा कार्यालय में भेज देवें। इसी के साथ जो सज्जन महासम्मेलन में अपनी आहुति अभी तक न दे सकें तो उनसे भी निवेदन है कि वे भी अपनी आहुति आवश्य ही भेजें। आप अपनी दान राशि एवं कूपनों पर एकत्र सहयोग राशि सीधे सम्मेलन बैंक खाते में भी नकद/चैक द्वारा जमा करा सकते हैं। कृपया अपनी सहयोग राशि/एकत्र की गई राशि का चैक **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन- 2018'** के नाम बनाएं। कृपया राशि जमा कराने के उपरान्त श्री मनोज नेगी जी (9540040388) को सूचित करके अपनी डिपोजिट स्लीप की फोटो व्हाट्सएप्प करें अथवा अपने नाम पते के साथ aryasabha@yahoo.com पर ईमेल करें, ताकि आपको राशि की रसीद भेजी जा सके। बैंक खाते का विवरण इस प्रकार है -

'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा - महासम्मेलन- 2018'
A/c No. 918010068587610 IFSC Code : UTIB0002193
Axis Bank, Cannought Place, New Delhi

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभि:' अर्थात् यह यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/ परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं।

– ***सत्यप्रकाश आर्य 9650183335***

आर्य सन्देश

क्या आप चाहते हैं कि-

आर्यसन्देश को प्रचारित प्रसारित किया जाए?

आपके चाहने वालों को भी प्राप्त हो?

आपके विदेश में रहने वाले दोस्तों को भी प्राप्त हो?

आपके मित्रों-रिश्तेदारों को भी प्राप्त हो जो इसे पढ़ने की रूचि रखते हों?

यदि हां! तो

जिन मित्रों को आर्यसन्देश पढ़ाना चाहते हैं उनकी ईमेल आई.डी. लिखकर हमें डाक से भेजें, ईमेल करें या 9540040322 पर एस.एम.एस. करें। उन्हें आर्यसन्देश प्रति सप्ताह इंटरनेट द्वारा भेजा जाता रहेगा।

सोमवार 7 जनवरी, 2019 से रविवार 13 जनवरी, 2019
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान् रोड, नई दिल्ली-110001
दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2018-19-2020
नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 10-11 जनवरी, 2019
पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2018-19-2020
आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 9 जनवरी, 2019

आर्य प्रतिनिधि सभा कनार्टक का त्रैवार्षिक निर्वाचन सम्पन्न

श्री सुभाष अष्टिकर पुन: सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा कनार्टक का त्रैवार्षिक साधारण सभा अधिवेशन एवं निर्वाचन दिनांक 6 जनवरी, 2019 को आर्यसमाज रायचूर में सम्पन्न हुआ। इस त्रैवार्षिक निर्वाचन में श्री सुभाष अष्टिकर जी को पुन: सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित घोषित किया गया। इस अवसर पर **उप प्रधान :** श्री दिनकर जी शेट्टी (मंगलूर), **मन्त्री :** श्री सीद्दाजी पाटील (कलबुरगी), **उप मन्त्री :** श्री ऋषिमित्र वानप्रस्थी (बेंगलूरु), एवं **कोषाध्यक्ष** के रूप में श्री नारायण चिद्री (हुमनाबाद) को निर्वाचित घोषित किया गया। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार की ओर से नव निर्वाचित अधिकारियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

श्री सुभाष अष्टिकर जी
प्रधान

श्री सीद्दाजी पाटील जी
मन्त्री

श्री नारायण चिद्री जी
कोषाध्यक्ष

प्रतिष्ठा में,

एक करोड़ छब्बीस लाख
से अधिक लोगों ने अब तक देखा
आर्यसमाज YouTube चैनल

ओ३म्
thearyasamaj.org

आप भी देखें और सब्सक्राइब अवश्य करें और अपने मित्रों, सम्बन्धियों को देखने की प्रेरणा करें। यदि आप लगातार नई वीडियो देखना/सूचना प्राप्त करना चाहते हैं तो घंटी बटन दबाकर सब्सक्राइब करें। यदि आप भी अपने आर्यसमाज के आयोजनों - भजन, प्रवचन, सन्देशात्मक कार्यक्रम, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों को इस चैनल पर अपलोड कराने के लिए upload@thearyasamaj.org पर भेजें। - महामन्त्री

खुशखबरी! खुशखबरी!!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा
वर्ष 2019 का कैलेण्डर प्रकाशित

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

200 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (300/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
मो. 09540040339, 23360150

वैचारिक क्रान्ति के लिए
महर्षि दयानन्दकृत
"सत्यार्थ प्रकाश"
पढ़ें और पढ़ावें

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नारायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित
सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह